Review of Research
International Online Multidisciplinary Journal

ISSN 2249-894X Impact Factor : 3.1402 (UIF) Volume - 5 | Issue -5 | Feb - 2016

पर्यावरण सभानता प्रसारमें समूह मध्यमोकी भूमिका

डॉ. धीरज परमार
सहप्राध्यापक , आणंद एज्युकेशन कोलेज, आणंद.

प्रस्तावना

आदिमानव से आधुनिक मानव की विकासयात्रा में कुदरती स्त्रोत का बहुत बडा हिस्सा है। मनुष्य ने अपनी सुविद्या के लिए कुदरती स्त्रोत के साथ बडा कठोर व्यवहार किया है। इसलिए आज हमारे सामने पर्यावरण से संबंधित कइ समस्याए खडी है। हमारे देश में मानववस्ती भी पूरी जोश में बढ रही है इसकी वजह से कइ सारी समस्या का सामना करना पडता है। आज हमारे देशमें हवा, जल, भूमि, आवाज के प्रदूषण बढता जा रहा है। हवामान भी बदल रहा है। ओझोन के स्तरमें गडबडी हुइ है। ग्लोबल वोर्मिंग की वजह से कइ सारी समस्या भुगतनी पडती है। कहीं बाढ तो कही अकाल, भूकंप, त्सुनामी जैसी समस्या से आज हम पेरशान हो रहे है। मानव वस्ती की बढोतरी से सभी की आवश्यकताए संपन्न नहीं हो सकती इसलिए गरीबी, बेरजोगरी, दंगा, जैसी समस्या का सामना करना पडता है।

मानव वस्ती की आवश्यकता की पूर्ति के लिए उद्योग, धंधे, कारखाने लगाए जा रहे है। अनाज उत्पादन की भूमि कम है रही है। शहर बढता जा रहा है। गाँवो की हालत बिगडती जा रही है। लोकमाता जैसी हमारी नदीयाँ प्रदूषित हो रही है। खानेपीने की चीजवस्तु में मिलावट हो रही है। मनुष्य के सामने कइ सारी स्वास्थ्य संबंधी समस्या भी है।

पर्यावरण बचाने के लिए राष्ट्रीय और आंतरराष्ट्रीय स्तर पर परिसंवाद और अध्ययन चल रहा है। कइ सारी संस्थाए भी पर्यावरण बचाने के प्रयासो में जुडी हुइ है। १९७२ में स्टोकहोम स्वीडन में यु.एन. के माध्यम से पर्यावरण के बारे में प्रथम अंतरराष्ट्रीय परिषद का आयोजन हुआ। इस परिषद से विश्व में UNEP युनाइटंडे नेशन्स एन्वायरमेन्ट प्रोग्राम की शुरुआत जनवरी १९७५ में हुइ। अक्तूबर १९७५ में युगोस्लाविया के बेलग्रेड में आंतरराष्ट्रीय पर्यावरण कार्यशाला का आयोजन हुआ। इस कार्यशालामें पर्यावरण के परिप्रेक्ष्य में वैश्विक समज पूरे विश्वमें बढाने की बात का स्वीकार किया गया। अक्तूबर १९७७ में तिबलिसी (Tbilisi) ज्योर्जिया - USSR में पर्यावरण के बारे में आंतरराष्ट्रीय स्तर पर परिषद हुइ जिस में त्रिवर्षीय कार्यक्रम जारी किया गया। इस परिषद के रिपोर्ट में इस प्रकार लिखा गया था।

In the last few decades, man has through his power to transform his environment wrough accelerated changes in the balance of nature. The result is frequent exposure of living species to dangers which may prove irrevesible.

शाला, महाशाला, युनिवर्सिटी भी छात्रो में पर्यावरण शिक्षा के माध्यम से पर्यावरण सभानता का समाजपयोगी कार्य कर रहे है। अभी शाला, महाशाला में पर्यावरण शिक्षा का विषय अभ्यासक्रम में अनिवार्य हो गया है। समूह माध्यम भी पर्यावरण सभानता के लिए बहुत असरकारक माध्यम है। आजकल शहर, गाँव सभी जगह समूह माध्यमका बडा प्रभा है। वर्तमानपत्र, रेडियो, टेलिविझन, इन्टरनेट और मुद्रित सामग्री पर्यावरण सभानता के लिए बहुत महत्वपूर्ण है। शहर और ग्राम्य विस्तार के सभी समूह के लोगो में पर्यावरण सभानता के लिए समूह माध्यम काफी उपयोगी है।

वर्तमानपत्र और सामयिक :-

सुबह में चाय के कप के साथ वर्तमानपत्र सभी के घर में पहुँच जाता है । वर्तमानपत्र माहिती, मनोरंजन और नइ सोच लेकर जनता के पास पहूँचता है । पर्यावरण समस्या की कइ सारी बाते वर्तमानपत्र में और सामयिक में प्रकाशित होती है । हमारे देश में टाइम्स ओफ इन्डिया, हिन्दुस्तान टाइम्स, इन्डियन एक्सप्रेस जैसे प्रसिध्ध वर्तमानपत्र प्रतिदिन पर्यावरण समस्या के बारे में सरकार के प्रयासो और कानूनी जानकारी जनता के लिए प्रसिध्ध करते है । हमारे देश में हरेक राज्य में अपनी स्थानिक भाषा में वर्तमानपत्र पर्यावरण सभानता की बाते जनता के सामने रखते है । वर्तमानपत्र में पर्यावरण के बारे में माहिती, संशोधन, आर्टिकल, चित्र, कविता, व्यंगचित्र, स्लोगन, प्रसिध्ध होने से सभी नागरिको के दिल में पर्यावरण बचाने का संदेश अवश्य पहूँचता है । वर्तमानपत्र के साथ विविध सामयिक भी पर्यावरण के बारे मे रसप्रद आर्टिकल, कविताए, स्लोगन, कथा के माध्यम से पर्यावरण सभानता लाने में अहम भूमिका प्रदान करते है । वर्तमानपत्र और सामयिक की विशेषता ये है की हम जब चाहे तब पढ सकते है, देख सकते है । वर्तमानपत्र का मूल्य भी ज्यादा नहीं है । इस लिए सभी घरो में, स्कूल, कोलेज में वर्तमानपत्र खरीदा जाता है और उसकी पढाई भी होती है । सार्वजनिक पुस्तकालय में भी वर्तमानपत्र और सामयिक आमजनता के लिए बहुत सरलता से उपलब्ध है । वर्तमानपत्र मे ऐसे अच्छे चित्र भी प्रसिध्ध होते है जीस को अनपढ आदमी भी देखते ही समज सकता है । आजकल वर्तमानपत्र और सामयिक इन्टरनेट के माध्यम से पढ सकते है ।

रेडियो :-

रेडियो एक सस्ता और बहुत सरलता से साथ में रख शके ऐसा साधन है । आजकल विज्ञान और तकनिकी की वजह से कोइ भी जगह में रेडियो सुन सकते है । रेडियो एक श्राव्य साधन है । FM रेडियो के आने के बाद देश में बहुत लोग रेडियो को सुनते है । FM रेडियो मनोरंजक माहिती के साथ प्रवतमान समस्या के बारे में जानकारी देता है । पर्यावरण समस्या स्थानिक समस्या नहीं है बल्कि आंतरराष्ट्रीय समस्या है । सुप्रिम कोर्टने भी ये जारी किया है की सभी समूह माध्यमो को पर्यावरण सभानता की बाते प्रकाशित और प्रसारित करना अनिवार्य है । केन्द्र और राज्य के पर्यावरण एवं वन मंत्रालय की आवश्यक सूचनाए और माहिती रेडियो के माध्यम से जनता को सुनाइ जाती है । हमारा देश कृषिप्रधान है इसलिए कृषि क्षेत्र के संशोधन, मार्गदर्शन और आवश्यक माहिती रेडियो के माध्यम से प्रसारित होती है । ओल इन्डिया रेडियो और इन्डियन नेशनल रेडियो नेटवर्क के ध्वारा पर्यावरण समस्या जैसे की जल, वायु, भूमि, आवाजप्रदूषण, वनकटौती और ओर्गेनिक कृषि के बारे में माहिती रेडियो ध्वारा प्रसारित की जाती है । हमारा देश गाँवो का हे कइ सारे लोग अनपढ है लेकिन रेडियो के माध्यम से पर्यावरण समस्या की बाते सुनकर समज सकते है । रेडियो के ध्वारा जनता को मनोरंजन और शिक्षा भी मिलती है ।

टेलिविझन :-

टेलिविझन का प्रभाव पूरे देश और विश्वमें है । टेलिविझन के माध्यम से बुढे, बच्चे, छात्र-छात्राए, महिलाए, अनपढ, अमीर और गरीब सभी को मनोरंजन, माहिती और नये विचार मिलते है । रेडियो, वर्तमानपत्र की तुलना में टेलिविझन का उपयोग ज्यादातर होता है । टेलिविझन एक मजबूत और प्रभावशाली माध्यम है जिसकी वजह से पर्यावरण जैसी वैश्विक समस्या के बारे में सभी को बहुत सरलता से सभान कर सकते है । हमारे घरो में लोग टेलिविझन देखने में काफी वक्त बीताते है । सुप्रिम कोर्टने घोषित किया है की टेलिविझन पर्यावरण समस्या के बारे में माहिती अवश्य प्रसारित करे । दो कार्यक्रम के बीच में सरकार की पर्यावरण संदर्भ की माहिती टेलिविझन पर कुछ सेकन्ड के लिए प्रसारित होती है । टेलिविझन पर पर्यावरण के स्लोगन, चित्र और समाचार प्रसारित किया जाता है । टेलिविझन पर शैक्षणिक कार्यक्रम से भी पर्यावरण समस्या के बारे में जनता को माहिती मिलती है । डिस्कवरी चेनल, नेशनल जियोग्राफी चेनल और एनिमल प्लेनेट चेनल वन्य जीवन, सागर जीवन और खत्म होने वाले प्राणी के बारे में माहिती प्रसारित करते है ।

टेलिविझन पर देखना और सुनना दोनो एकसाथ होता है । है इसलिए उसका प्रभाव ज्यादा होता है । देखी हुए और सुनी हुइ बाते दीर्घकाल तक याद रहती है और दिनप्रति दिन समजदारी भी बढती है और समझदारी की बजह सै हमारा व्यवहार सुनिश्चित होता है । टेलिविझन पर जल, वायु, भूमि, आवाज प्रदूषण के बारे में जानकारी प्रसारित होती है । पर्यावरण समस्या को कइबार नाट्यकला के माध्यम से भी प्रदर्शित किया जाता है । पर्यावरण समस्या कि विज्ञापन भारत सरकार के पर्यावरण एवं वनमंत्रालय की सूचना अनुसार हररोज प्रसारित करना अनिवार्य है । प्राइवेट टी.वी. चेनल को भी पर्यावरण विज्ञापन प्रसारित करने को कहा गया है । ''सत्यमेव जयते'' कार्यक्रम के एपीसोड में पर्यावरम समस्या के बारे में जानकारी देने का प्रयास बहुत महत्वपूर्ण था । सरकारी दूरदर्शन के माध्यम से भी पर्यावरण सभानता का कार्यक्रम अच्छी तरह से चलता है । टेलिविझन के माध्यम से आम जनता में पर्यावरण समस्या संबधित और

प्रदूषण संबधित समज द्रढ होती है और ये समजदारी से लोग व्यवहार भी करने लगते है । इस प्रकार टेलिविझन पर्यावरण सभानता के लिए बहुत बडा माध्यम है ।

उपसंहार :-

पर्यावरण सभानता के लिए समूह माध्यम की भूमिका अति आवश्यक और महत्वपूर्ण है । रेडियो के माध्यम से गाँवो में रहने वाले देहाती लोग पर्यावरण के बारे में सभान होते है । अनपढ लोग रेडियो और टेलिविझन के माध्यम से पर्यावरण के बारे में माहितगार होते है । टेलिविझन का प्रभाव पूरे देश और विश्व में है इसलिए पर्यावरण सभानता कार्यक्रम को अत्यंत प्रभावित रुप में प्रसारित करना आवश्यक है ।

टिप्पणी

१.रावल नटुभाइ (२००५) पर्यावरण शिक्षा, नीरव प्रकाशन, अहमदाबाद,
२.पटेल जीज्ञेश (२००८) पर्यावरण शिक्षा, बी.एस.शाह प्रकाशन, अहमदाबाद.
३.माथुर रमा (२००६) पर्यावरण अध्ययन, संजय प्रकाशन, दिल्ली.
४. शर्मा टी.सी. (२००८) पर्यावरण शिक्षा, रजत प्रकाशन, नई दिल्ली,